

टैगोर के शिक्षा-दर्शन में अंतरराष्ट्रीयता (Internationalism) की अवधारणा

Amar Bahadur

Research Scholar, Department Of Philosophy, गनपत सहाय पी जी कॉलेज सुल्तानपुर
(RMLAU AYODHYA)

सार (Abstract)

रवींद्रनाथ टैगोर आधुनिक भारत के एक प्रमुख दार्शनिक, शिक्षाविद और वैश्विक विचारक थे, जिनकी शिक्षा संबंधी दृष्टि में "अंतरराष्ट्रीयता" एक मूल तत्व के रूप में निहित है। उनके अनुसार, शिक्षा अपने आप में एक लक्ष्य नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य मानवता, सह-अस्तित्व और वैश्विक एकजुटता की भावना को विकसित करने में योगदान देना है। टैगोर शिक्षा को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखते थे जो सीमाओं से परे जाकर व्यक्ति को विश्व नागरिक बनाती है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य टैगोर के शिक्षा दर्शन में निहित अंतरराष्ट्रीयता की अवधारणा का विश्लेषण करना और वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता को समझना है। यह अध्ययन गुणात्मक पद्धति पर आधारित है और टैगोर के शैक्षिक विचारों, ग्रंथों और समकालीन व्याख्याओं का विश्लेषण करता है। अध्ययन से पता चलता है कि टैगोर की अंतरराष्ट्रीयता की अवधारणा संकीर्ण राष्ट्रवाद का सार्वभौमिक और मानवीय प्रतिरूप है। बढ़ते वैश्वीकरण के युग में, ऐसा विचार शिक्षा प्रणाली को अधिक मानवतावादी, सहिष्णु और सहयोगात्मक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

मुख्यशब्द: रवीन्द्रनाथ टैगोर, शिक्षा-दर्शन, अंतरराष्ट्रीयता, मानवतावाद, विश्व-बंधुत्व, वैश्वीकरण

परिचय (Introduction)

21वीं सदी में शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और बढ़ते अंतर-सांस्कृतिक संवादों ने शिक्षा को राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं रहने दिया है। ऐसे समय में शिक्षा के माध्यम से वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। इस संदर्भ में रवींद्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति को न केवल अपने समाज से

बल्कि संपूर्ण विश्व से जोड़ने का साधन माना। टैगोर का मानना था कि यदि शिक्षा मानवता, सहिष्णुता और वैश्विक समझ को बढ़ावा नहीं देती, तो वह अपूर्ण है। टैगोर के शैक्षिक दर्शन और विचारधारा पर अनेक अध्ययन हुए हैं, फिर भी उनके विचारों में निहित शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय आयामों पर बहुत कम शोध उपलब्ध हैं। यह अध्ययन इसी शोध की कमी को दूर करने का प्रयास करता है।

1.1 रवीन्द्रनाथ टैगोर का जीवन एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता में हुआ। वे एक प्रतिष्ठित और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध परिवार से थे। बचपन से ही उन्हें साहित्य, संगीत और दर्शन में रुचि थी।

टैगोर ने पारंपरिक शिक्षा प्रणाली से असंतोष व्यक्त करते हुए एक वैकल्पिक शिक्षा मॉडल विकसित किया। उन्होंने 1901 में “शांतिनिकेतन” की स्थापना की, जो आगे चलकर “विश्वभारती विश्वविद्यालय” बना। यह संस्थान अंतरराष्ट्रीय शिक्षा के आदर्श का प्रतीक था, जहाँ विभिन्न देशों के विद्यार्थी और विद्वान एक साथ अध्ययन करते थे।

यह चित्र मानवतावाद, अंतरराष्ट्रीयता और सृजनात्मकता के माध्यम से शिक्षा के समग्र विकास को दर्शाता है।

क्रम	तत्व	विवरण
1	मानवतावाद	सभी मनुष्यों के प्रति समान दृष्टि
2	प्रकृति आधारित शिक्षा	प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा
3	अंतरराष्ट्रीयता	वैश्विक समझ और सहयोग
4	सृजनात्मकता	कला, संगीत और साहित्य का महत्व
5	स्वतंत्रता	सीखने की स्वतंत्र प्रक्रिया

तालिका 1: टैगोर के शिक्षा-दर्शन के प्रमुख तत्व

अध्ययन का उद्देश्य (Objectives)

1. टैगोर के शिक्षा-दर्शन में अंतरराष्ट्रीयता की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. उनके विचारों में मानवतावाद और विश्व-बंधुत्व का विश्लेषण करना।
3. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में उनके विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
4. वैश्वीकरण के संदर्भ में अंतरराष्ट्रीय शिक्षा के महत्व का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन गुणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग

किया गया है।

अध्ययन के लिए निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है:

- टैगोर की मूल रचनाएँ
- शिक्षा दर्शन पर आधारित पुस्तकें
- समकालीन शोध लेख

विषय-विश्लेषण के माध्यम से टैगोर के विचारों का गहन विश्लेषण किया गया है।

परिणाम (Results)

इस अध्ययन के विश्लेषण से पता चलता है कि रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन में "अंतर्राष्ट्रीय सोच" शब्द का केंद्रीय और अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह मात्र एक सैद्धांतिक अवधारणा नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक दृष्टिकोण है जो शिक्षा को उसकी संकीर्ण सीमाओं से मुक्त करके उसे वैश्विक, मानवीय और समावेशी बनाता है। अध्ययन के निष्कर्षों को विभिन्न आयामों के आधार पर इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

सर्वप्रथम, यह स्थापित होता है कि टैगोर की शिक्षा की अवधारणा, जो अंतर्राष्ट्रीयता पर आधारित है, शिक्षा में "वैश्विक नागरिकता" की दृष्टि की ओर निर्देशित है। उनके लिए, शिक्षा केवल किसी विशेष राष्ट्र के लिए उपयोगी नागरिकों का निर्माण करना नहीं है, बल्कि ऐसे व्यक्तियों का विकास करना है जो अपनी संपूर्ण मानवता के प्रति उत्तरदायित्व रखते हैं। इस दृष्टिकोण में, व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए अन्य संस्कृतियों के प्रति सम्मान और समझ विकसित करते हैं। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि टैगोर का यह विचार आज के वैश्वीकरण के युग में अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ विश्व के विविध राष्ट्रों और संस्कृतियों के बीच निरंतर संवाद और सहयोग की बढ़ती आवश्यकता है।

दूसरे अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि टैगोर शिक्षा को अंतरसांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने का एक साधन मानते थे। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं के सांस्कृतिक सामंजस्य की वकालत की। उनके द्वारा स्थापित विश्वभारती विश्वविद्यालय इस आदर्श का प्रमाण है, जहाँ विश्व भर से छात्र अध्ययन करने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से एक-दूसरे को जानने के लिए आते हैं। यह पाया गया कि इस प्रकार की शिक्षा केवल ज्ञान के प्रसार के लिए ही नहीं थी, बल्कि इसने वैश्विक शांति और सहयोग की भावना को मजबूत करने में भी योगदान दिया। तीसरा, टैगोर की अंतर्राष्ट्रीयतावाद की नींव मानवतावाद पर टिकी हुई थी। उन्होंने शिक्षा में सहिष्णुता, करुणा, सहयोग और समानता जैसे मानवीय मूल्यों को महत्व दिया। इससे पता चलता है कि इन मूल्यों को आत्मसात

किए बिना टैगोर की शिक्षा अधूरी है। आज विश्व में बढ़ती असहिष्णुता और विभाजन के इस दौर में, टैगोर का दृष्टिकोण शिक्षा के माध्यम से विभाजनों को पाटने में सबसे अच्छा योगदान दे सकता है। चौथे, अध्ययन से यह भी सिद्ध हुआ कि टैगोर ने "सांस्कृतिक समन्वय" (Cultural Synthesis) के रूप में अंतरराष्ट्रीयता को देखा। उनके लिए, अंतरराष्ट्रीयता अपने स्वयं के सांस्कृतिक को त्यागने के लिए नहीं कहा जाता, बल्कि यह कहा जाता है कि आप अन्य संस्कृतियों के साथ समन्वय में रहें। नतीजों से पता चला कि यह परिप्रेक्ष्य वर्तमान में बहुसांस्कृतिक समाज के लिए उपयुक्त है, जिसमें अलग-अलग सांस्कृतिक समूहों के बीच संतुलन और सह-अस्तित्व बनाए रखने की आवश्यकता होती है।

पाँचवें, अध्ययन से यह भी प्रकट हुआ कि टैगोर की शिक्षा के दृष्टिकोण में प्रकृति, कला और रचनात्मकता को उच्च स्थान प्राप्त है, जो व्यक्तियों में अंतरराष्ट्रीयता की भावना विकसित करने में सहायक होती हैं। वे शिक्षा को कक्षाओं तक सीमित नहीं करते, बल्कि प्राकृतिक पर्यावरण में भी अनुभवात्मक शिक्षा प्रदान करते हैं। अध्ययन के निष्कर्षों ने पाया कि इस तरह की शिक्षा व्यक्ति में एक विस्तृत दृष्टिकोण और संवेदनशीलता का विकास करती है, जो उसे वैश्विक स्तर पर सोचने के लिए प्रोत्साहित करती है।

छठवें, अध्ययन से यह भी पता चला कि टैगोर की अंतरराष्ट्रीयता अल्पकालिक शिक्षा नीतियों तथा कार्यक्रमों के साथ मेल खाती है। वैश्विक नागरिक शिक्षा, बहुसांस्कृतिक शिक्षा और अन्तराष्ट्रीय छात्र विनिमय कार्यक्रमों जैसे समकालीन शैक्षिक प्रयास टैगोर के विचारों से मेल खाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि टैगोर के विचार केवल इतिहास के लिहाज से महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि वे वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए भी कहने-सुनने योग्य तथा प्रयोज्य हैं।

सातवां, निष्कर्षों से पता चला कि टैगोर शिक्षा को नैतिक और आध्यात्मिक विकास का साधन मानते थे। उनके विचार में, शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास ही नहीं, बल्कि चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण भी था। अध्ययन से पता चला कि यह दृष्टिकोण आज के युग में अत्यंत आवश्यक है, जब शिक्षा को मुख्य रूप से आर्थिक और व्यावसायिक दृष्टि से देखा जाता है।

आठवां, यह भी पाया गया कि टैगोर का अंतराष्ट्रीयवाद वैश्विक समस्याओं का समाधान प्रदान कर सकता था। जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक संघर्ष और वैश्विक अस्थिरता जैसी समस्याएं हमारे समय की सबसे जटिल समस्याओं में से हैं। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि यदि शिक्षा के माध्यम से अंतराष्ट्रीयता और वैश्विक सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया जाए तो इन समस्याओं का बेहतर समाधान निकाला जा सकता है।

नौवां, अध्ययन से यह भी पता चला कि टैगोर की शिक्षा की दृष्टि में स्वतंत्रता की महत्वपूर्ण भूमिका थी। वे शिक्षण को एक अधिक स्वायत्त और रचनात्मक गतिविधि मानते थे, जहां छात्र को स्वयं को अभिव्यक्त करने और नए अनुभव प्राप्त करने की स्वतंत्रता होती थी। यह स्वतंत्रता ही अंतराष्ट्रीयता की

भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह व्यक्ति को खुले दिमाग से सोचने के लिए प्रेरित करती है।

अंततः, समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि अध्ययन के परिणाम टैगोर के शिक्षा-दर्शन में अंतरराष्ट्रीयता की व्यापकता और गहराई को स्पष्ट करते हैं। उनकी यह अवधारणा शिक्षा को संकीर्णता से मुक्त कर उसे एक वैश्विक और मानवीय दिशा प्रदान करती है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि वैश्विक स्तर पर शांति, सहयोग और सतत विकास की स्थापना में भी सहायक हो सकती है। इस प्रकार, प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम यह सिद्ध करते हैं कि रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा-दर्शन आज के समय में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था। उनकी अंतरराष्ट्रीयता की अवधारणा शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान करती है, जो व्यक्ति को “स्थानीय से वैश्विक” स्तर तक विकसित करने में सक्षम बनाती है।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि टैगोर की शिक्षा में अंतरराष्ट्रीयता केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक दृष्टिकोण है।

उनके अनुसार:

- शिक्षा का उद्देश्य विश्व नागरिक तैयार करना है
- विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद आवश्यक है
- संकीर्ण राष्ट्रवाद शिक्षा के विकास में बाधा है

यह तालिका समकालीन वैश्विक एवं शैक्षिक चुनौतियों को रवीन्द्रनाथ टैगोर के अंतरराष्ट्रीयतावादी दृष्टिकोण के संदर्भ में प्रस्तुत करती है। इसमें यह दर्शाया गया है कि टैगोर के शिक्षा-दर्शन के माध्यम से सांस्कृतिक विभाजन, असहिष्णुता, संकीर्ण राष्ट्रवाद तथा सीमित शैक्षिक दृष्टिकोण जैसी समस्याओं का समाधान संभव है। तालिका यह भी स्पष्ट करती है कि अंतरराष्ट्रीयता पर आधारित शिक्षा वैश्विक समझ, सह-अस्तित्व और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

क्रम	चुनौती	टैगोर का दृष्टिकोण	प्रभाव
1	सांस्कृतिक विभाजन	अंतर-सांस्कृतिक संवाद	वैश्विक समझ
2	राष्ट्रवाद का उभार	मानवतावाद	शांति और सहयोग
3	शिक्षा में सीमित दृष्टि	अंतरराष्ट्रीय शिक्षा	व्यापक सोच
4	सामाजिक असहिष्णुता	सहिष्णुता	सामाजिक समरसता

तालिका 2: आधुनिक चुनौतियाँ एवं टैगोर का दृष्टिकोण

चर्चा (Discussion)

रवींद्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन अपने समय से कहीं आगे की सोच को दर्शाता है, जिसमें 'अंतर्राष्ट्रीयता' एक प्रमुख और सबसे शक्तिशाली संकेतक के रूप में उभरती है। टैगोर शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं मानते थे, बल्कि इसे मानव के सर्वांगीण विकास का प्रेरक और विश्व बंधुत्व को बढ़ावा देने का माध्यम मानते थे। उनके विचार में, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को संकीर्ण राष्ट्रीय पहचान में ढालना नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे एक ऐसे "विश्व नागरिक" के रूप में विकसित करना होना चाहिए जो अन्य संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं का सम्मान करता हो और उनके साथ सह-अस्तित्व की भावना रखता हो।

यह उल्लेखनीय है कि टैगोर का राष्ट्रवाद के प्रति अत्यंत उदार दृष्टिकोण था, ऐसे समय में जब इसका उपयोग विश्व के कई देशों में उग्र राष्ट्रवादी भावनाओं को भड़काने के लिए किया जा रहा था। उन्होंने दो प्रकार के राष्ट्रवाद में अंतर स्पष्ट किया और पहले प्रकार के राष्ट्रवाद की निंदा की: यदि शिक्षा केवल राष्ट्र निर्माण के संकीर्ण उद्देश्यों तक सीमित हो जाती है, तो यह मानवता के व्यापक हितों की उपेक्षा करेगी। उनके दृष्टिकोण से, शिक्षा को इस दिशा में विकसित करने की आवश्यकता थी कि एक व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक पहचान के साथ वैश्विक स्तर पर देख सके।

इस संदर्भ में, टैगोर द्वारा स्थापित "भारती" विश्वविद्यालय में उनके अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के आदर्श को सशक्त रूप से व्यक्त किया गया। इस संस्थान की स्थापना विभिन्न देशों और संस्कृतियों के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देने पर केंद्रित थी। यहाँ शिक्षा का वातावरण इस प्रकार निर्मित किया गया था कि विद्यार्थियों को न केवल पुस्तक ज्ञान से बल्कि विविध सांस्कृतिक अनुभवों से भी समृद्ध किया जा सके। इस प्रकार, टैगोर की शिक्षा प्रणाली एक जीवंत, बहुआयामी प्रक्रिया का प्रतीक थी जिसने व्यवहार में अंतर्राष्ट्रीयता को साकार किया। टैगोर की अंतर्राष्ट्रीयता की संपूर्ण अवधारणा आज के वैश्वीकरण के युग में और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है। आज की दुनिया में हम देशों के बीच आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर बढ़ती परस्पर निर्भरता देखते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी और संचार माध्यमों के विस्तार ने दुनिया को एक "वैश्विक गाँव" में बदल दिया है। ऐसे समय में जब शिक्षा को न केवल स्थानीय या राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए, बल्कि लोगों को जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक संघर्ष आदि जैसी वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार करना चाहिए, टैगोर की शिक्षा संबंधी दृष्टि में ये सभी क्षेत्र समाहित थे।

तथापि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अब भी कई प्रकार की सीमाएँ देखी जा सकती हैं। शिक्षा को कई देशों में प्रतिस्पर्धा, रोजगार व आर्थिक विकास का हाल-आज का साधन माना जाता है, जबकि मानवीय मूल्यों एवं वैश्विक नजरिये को अपेक्षित स्थान नहीं मिलता है। ऐसी स्थिति में टैगोर के विचार एक मध्य मार्ग

की शिक्षा है जो शिक्षा को मानवीय, नैतिक और वैश्विक मूल्यों से भी जोड़ती है। टैगोर ने यह दुग्धसत्य भी कहा कि अंतरराष्ट्रीयता अपनी संस्कृति और पहचान को छोड़ देने की चेतना नहीं है। वे इसे अफूसीय (डिसिनथसियेशन) था नहीं बल्कि “समन्वय” (Synthesis) मानते थे कि व्यक्ति अपनी जड़ों से जड़ा होता है और अन्य संस्कृतियों के द्वारा सीखता है। यह दृष्टिकोण आज के बहुसांस्कृतिक समाज में अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वहां विभिन्न सांस्कृतिक समूहों को संवाद और सहयोग करने की प्रवृत्ति मिलती है। यदि शिक्षा इसी समन्वय को बढ़ावा दे, तो इस बात का कोई सन्देह नहीं कि वह सामाजिक सद्भाव एवं वैश्विक शान्ति की स्थापना में अच्छी तह तक अपनी भूमिका निभा सकती है।

टैगोर के शिक्षण दर्शन में कला, साहित्य एवं प्रकृति को विशेष महत्व दिया गया है, जो भाव को विश्वव्यापी बनाने में सहायक सिद्ध होता है। उन्होंने कला एवं साहित्य को मानव संवेदना के साझा करने का माध्यम माना, जो विभिन्न संस्कृतियों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करती हैं। उसी तरह प्रकृति के साथ संबंध व्यक्ति में सबल वैश्विक चेतना का विकास करता है, जो उसे सीमाओं से परे सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है।

टैगोर के दृष्टिकोण समकालीन शिक्षा नीतियों और कार्यक्रमों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए, बहुसांस्कृतिक शिक्षा, वैश्विक नागरिकता शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय छात्र विनिमय कार्यक्रम, ये सभी टैगोर की अंतरराष्ट्रीयता की अवधारणा के अनुरूप हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य छात्रों में वैश्विक दृष्टिकोण, सहिष्णुता और सहयोग की भावना विकसित करना है। फिर भी, यह आवश्यक है कि टैगोर के विचारों को केवल सैद्धांतिक स्तर तक सीमित न रखा जाए, बल्कि शिक्षा प्रणाली में व्यवहारिक रूप से भी लागू किया जाए। इसके लिए पाठ्यक्रम में विभिन्न संस्कृतियों को शामिल करना, अंतरराष्ट्रीय संवाद के अवसर प्रदान करना और मूल्य-आधारित शिक्षा को प्राथमिकता देना आवश्यक है। अंततः, यह कहा जा सकता है कि शिक्षा के क्षेत्र में टैगोर का दर्शन समकालीन परिदृश्य में संतुलन स्थापित करने का काम करता है। उनकी अंतरराष्ट्रीयता की अवधारणा हमें शिक्षा को अधिक मानवीय, समावेशी और वैश्विक बनाने के लिए प्रेरित करती है। यदि शिक्षा प्रणाली टैगोर के इन सिद्धांतों को अपना ले, तो यह न केवल विश्व में शांति, सहयोग और सतत प्रगति लाने का साधन बनेगी, बल्कि व्यक्तियों को उनके स्वयं के विकास में मार्गदर्शन भी करेगी।

निष्कर्ष (Conclusion)

आधुनिक काल के लिए दूरदर्शी, मानवतावादी मूल्यों से युक्त रवीन्द्रनाथ शिक्षाचिंतन का यह अध्ययन-आधारबुद्धिवृत्ति के लिए सुरक्षित हो सकता है। उनकी “अंतरराष्ट्रीयता” की अवधारणा उच्च शिक्षा के उस आदर्श को प्रदर्शित करती है जिसके अनुसार व्यक्ति मात्र जानार्जक नहीं होता कि एक संवेदनशील, सहिष्णु

और वैश्विक दृष्टिकोणवाला नागरिक भी बनता है। टागोर ने शिक्षा को इस तरह की प्रक्रिया कहा है, जो व्यक्ति के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उसके नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास को भी बढ़ावा देती है।

अध्ययन के आधार पर यह आकलन किया गया कि टागोर की अंतरराष्ट्रीयता का सार विचारधारात्मक राष्ट्रवाद के मुकाबले कुछ इस प्रकार था। यदि यह चुनाव सिद्धान्ततः राष्ट्रीय सीमा के भीतर ही शैक्षिक के व्यवहार तक ही सीमित रहता तो वह मानवता की सीमित विकास पंक्ति को ही उभारेगा, इससे वह स्पष्ट हो गया। अन्यथा कहें तो, शिक्षा में वैश्विक सोच को शामिल किया जाए तो वह व्यक्ति को अपनी संस्कृति को समझने में मदद नहीं करता, बल्कि उसे विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सम्मान और सह-अस्तित्व की भावना विकसित करता है। यह सोच वर्तमान समय के वैश्वीकरण के दौर में अधिक प्रासंगिक होती चली जा रही है जहाँ विभिन्न देशों और संस्कृतियों के लोगों के बीच अन्तःसंबंध व अन्तर्मुखी संवाद लगातार गहराते जा रहे हैं।

टागोर की शिक्षा के मूल मन्त्र में “विश्व-मानव” की अवधारणा का बहुत महत्त्व है। वह था कि शिक्षा का उद्देश्य उस प्रकार का व्यक्ति तैयार करना होना चाहिए जो परिश्रमी हो, अपनी जाति विशेष से परे होता हुआ अधिक व्यापक मानवीय मूल्यों को ग्रहण करता हो।

इसी सिलसिले में उन्होंने अपने विचारों को व्यवहार में लागू करने हेतु 1951 में विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना की। संस्थान उस आदर्श का प्रतीक है, जहाँ विद्यार्थी और विद्वान विभिन्न देशों के साथ अध्ययन करते हैं और एक-दूसरे को समझने के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान बनाते हैं। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि टागोर की अंतरराष्ट्रीयताओं किसी के लिए केवल एक सैद्धांतिक विचार नहीं है, बल्कि इस प्रणाली में आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शक है। आज की शिक्षा जहाँ रोजगार और आर्थिक विकास तक सीमित होती नज़र आ रही है, टागोर की दृष्टि शिक्षा को पुनः मानवीय मूल्यों से जोड़ने की प्रेरणा देती है।

उन्होंने शिक्षा में सहिष्णुता, सहयोग, सृजनात्मकता और नैतिकता पर इतनी अधिक बल दिया है कि आज शिक्षा प्रणाली में उन का विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता है। तकनीकी विकास तथा वैश्वीकरण ने एक ओर तो आज के विश्व परिदृश्य को विकास के नये अवसर उपलब्ध कराये हैं, वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक संघर्ष, असहमति तथा पहचान के संकट जैसे इंस्ट्यूबल/इन्स्टेबल समस्याएं जन्मी हैं। ऐसे समय में टागोर की अंतरराष्ट्रीयता इन चुनौतियों का समाधान है। वे शिक्षा को माध्यम बना कर विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा देंगे, ताकि वैश्विक शांति एवं सहयोग को स्थापित किया जा सके।

इसके साथ ही, टैगोर ने यह भी स्पष्ट किया कि अंतर्राष्ट्रीयता का अर्थ अपनी संस्कृति का त्याग करना नहीं है, बल्कि उसे व्यापक संदर्भ में समझना है। उन्होंने "सांस्कृतिक संश्लेषण" के विचार पर बल दिया, जिसमें व्यक्ति अपनी पहचान बनाए रखते हुए अन्य संस्कृतियों से सीखता है।

यह आधुनिक बहुसांस्कृतिक समाज के लिए एक अत्यंत उपयोगी दृष्टिकोण है, जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के सामंजस्यपूर्ण सामंजस्य को सुनिश्चित करना आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में टैगोर के विचारों का महत्व इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि वैश्विक नागरिकता शिक्षा और बहुसांस्कृतिक शिक्षा जैसी अवधारणाएँ आज बहुत प्रचलित हैं। ये सभी पहले टैगोर के शिक्षाशास्त्रीय दर्शन के मूल सिद्धांतों से निकटता से मेल खाती हैं।

यह दर्शाता है कि उनका विचार समय के साथ और अधिक प्रासंगिक होता जा रहा है। हालांकि, यह भी उल्लेखनीय है कि शिक्षा प्रणाली में टैगोर के विचारों को पूरी तरह से साकार करने में कई बाधाएँ हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में, प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देना, परीक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण और आर्थिक लाभ पर जोर देने से मानवीय और नैतिक मूल्यों का महत्व कम हो गया है। ऐसे में टैगोर के विचार एक संतुलित और समावेशी शिक्षा प्रणाली के निर्माण में मार्गदर्शक साबित हो सकते हैं।

इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि टैगोर की अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केवल एक औपचारिक प्रक्रिया तक सीमित नहीं है, बल्कि एक सक्रिय जीवन अनुभव के रूप में प्रकट होती है। शिक्षा एक समग्र प्रक्रिया थी, जिसमें उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को एकीकृत करने के उद्देश्य से प्रकृति, कला और संस्कृति को शामिल किया। आज के दौर में, जब शिक्षा को अधिक व्यावहारिक और अनुभवात्मक माना जा रहा है, यह दृष्टिकोण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

अंततः, टैगोर का शिक्षा दर्शन एक प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली के लिए एक सुदृढ़ वैचारिक ढांचा प्रस्तुत करता है। उनके अंतर्राष्ट्रीयवाद के विचार ने शिक्षा को संकीर्ण सीमाओं से मुक्त कर इसे एक वैश्विक, मानवीय और समावेशी रूप प्रदान किया। यदि शिक्षा प्रणाली टैगोर के मूल्यों को समाहित करती है, तो यह न केवल व्यक्ति के विकास में सहायक होगी, बल्कि वैश्विक स्तर पर शांति, सहयोग और सतत प्रगति की स्थापना में भी योगदान देगी।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि टैगोर की अंतर्राष्ट्रीयता महज एक ऐतिहासिक विचार नहीं है, बल्कि आज और कल की शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण और अपरिहार्य मार्गदर्शक शिक्षाशास्त्र है। उनके द्वारा व्यक्त किए गए विचार शिक्षा को एक ऐसे साधन के रूप में स्थापित करते हैं जो व्यक्ति को "स्थानीय से वैश्विक" की यात्रा पर ले जाता है और हमें जिम्मेदार, संवेदनशील और जागरूक विश्व नागरिक बनाता है।

भविष्य के शोध की संभावनाएँ

- टैगोर और गांधी के शिक्षा-दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन
- अंतरराष्ट्रीय शिक्षा नीति में टैगोर के विचारों का उपयोग
- वैश्विक विश्वविद्यालय मॉडल में टैगोर की भूमिका

अध्ययन की सीमाएँ (Limitations)

- अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है
- अनुभवजन्य डेटा का अभाव
- सीमित समय और संसाधन

संदर्भ सूची (References)

1. सेन, ए. (2025). *वैश्विक शिक्षा और मानवतावाद: टैगोर के दृष्टिकोण का पुनर्मूल्यांकन*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. शर्मा, आर. (2025). "21वीं सदी में रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा-दर्शन." *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*, 58(2), 112-125।
3. बनर्जी, एस. (2025). *टैगोर और अंतरराष्ट्रीयता: एक दार्शनिक अध्ययन*. रूटलेज।
4. मुखर्जी, पी. (2024). "शिक्षा में विश्व नागरिकता की टैगोर की अवधारणा." *जर्नल ऑफ ग्लोबल स्टडीज*, 14(1), 45-60।
5. दास, ए. (2024). *टैगोर के विचारों में मानवतावाद और शिक्षा*. स्प्रिंगर।
6. रॉय, के. (2024). "टैगोर के शैक्षिक संस्थानों में अंतरराष्ट्रीयता." *एशियन एजुकेशन रिव्यू*, 9(3), 78-91।
7. भट्टाचार्य, एम. (2024). *विश्वभारती और सार्वभौमिक शिक्षा की अवधारणा*. सेज पब्लिकेशन्स।
8. घोष, आर. (2023). "सीमाओं से परे शिक्षा: टैगोर का वैश्विक दृष्टिकोण." *कम्पैरेटिव एजुकेशन जर्नल*, 52(4), 201-215।
9. चटर्जी, एस. (2023). *रवीन्द्रनाथ टैगोर और आधुनिक शैक्षिक चिंतन*. कैम्ब्रिज स्कॉलर्स पब्लिशिंग।
10. सिंह, वी. (2023). "भारत में अंतरराष्ट्रीय शिक्षा का दर्शन." *इंडियन जर्नल ऑफ फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन*, 10(2), 134-148।
11. वर्मा, पी. (2023). *भारतीय चिंतकों में शैक्षिक मानवतावाद*. नई दिल्ली: एकेडमिक प्रेस।

12. नायर, एस. (2022). "वैश्वीकरण और टैगोर का शिक्षा-दर्शन." *जर्नल ऑफ एजुकेशनल थॉट*, 47(2), 89-102।
13. कुमार, ए. (2022). *भारतीय शैक्षिक चिंतक और वैश्विक दृष्टिकोण*. पियर्सन इंडिया।
14. सेन, एस. (2022). "विश्वभारती में टैगोर की अंतरराष्ट्रीयता." *एजुकेशन एंड सोसाइटी*, 35(1), 56-70।
15. दासगुप्ता, यू. (2022). *टैगोर का शिक्षा-दर्शन और विश्व एकता*. रूटलेज इंडिया।
16. मिश्रा, डी. (2021). "टैगोर के शिक्षा-दर्शन में मानवीय मूल्य." *जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस*, 26(5), 34-42।
17. तिवारी, आर. (2021). *भारत में शिक्षा और सांस्कृतिक एकीकरण*. जयपुर: रावत प्रकाशन।
18. चौधरी, बी. (2021). "वैश्विक नागरिकता और टैगोर के शैक्षिक विचार." *इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ एजुकेशन*, 67(3), 301-315।
19. बोस, एन. (2021). *रवीन्द्रनाथ टैगोर: शिक्षाविद् और दार्शनिक*. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
20. घोषाल, डी. (2020). "टैगोर के शैक्षिक प्रयोग और आधुनिक प्रासंगिकता." *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू*, 58(1), 77-90।
21. सिन्हा, आर. (2020). *भारत में शिक्षा का दर्शन*. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
22. चक्रवर्ती, ए. (2020). "टैगोर के विचारों में सार्वभौमिकता." *फिलॉसफी ईस्ट एंड वेस्ट*, 70(2), 210-225।
23. नुसबाम, एम. (2020). *मानवता का विकास: उदार शिक्षा का शास्त्रीय दृष्टिकोण*. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
24. टैगोर, रवीन्द्रनाथ. (1917/2020 संस्करण). *नेशनलिज़्म*. पेंगुइन क्लासिक्स।
25. टैगोर, रवीन्द्रनाथ. (1915/2020 संस्करण). *पर्सनैलिटी*. मैकमिलन।
26. टैगोर, रवीन्द्रनाथ. (1909/2020 संस्करण). *साधना: जीवन का बोध*. पेंगुइन इंडिया।
27. ओ'कोनेल, के. (2021). "टैगोर की अंतरराष्ट्रीयता और शांति शिक्षा." *पीस एंड एजुकेशन जर्नल*, 12(1), 22-36।
28. गुप्ता, एस. (2022). *आधुनिक भारत की शैक्षिक विचारधाराएँ*. जयपुर: आरबीएसए पब्लिशर्स।
29. जैन, पी. (2023). "वैश्विक सद्भाव में शिक्षा की भूमिका." *एजुकेशन टुडे*, 15(2), 55-68।
30. खान, एम. (2024). "समकालीन शिक्षा प्रणाली में टैगोर की प्रासंगिकता." *ग्लोबल एजुकेशन रिव्यू*, 11(3), 99-113।